बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 9971426362
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-52 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त-सितंबर, 2015

आज के समय सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार बालकनामा लिखकर प्रकाशित करने लगे।

सड़क से संगठन तक

राष्ट्रीय सचिव ज्योति का सफर

बालकनामा ब्यूरो

15 वर्षीय ज्योति अपने पूरे परिवार के साथ सराय काले खां में रहती है। बढ़ते कदम संगठन से जुड़ने से पहले वह कबाड़ा बीनने व भीख मांगने का काम करती थी। लेकिन जब बढ़ते कदम संगठन से जुड़ी तो उसकी एक निडर सदस्य बनी। संगठन से जुड़ने के बाद उसके अंदर बहुत बदलाव आए।

बेहद संघर्षों भरे जीवन का सामना कर रही ज्योति को यह बहुत अच्छी तरह पता था कि एक लड़की के रूप में सड़क पर रहकर जीवन गुजारना कितना कठिन है। फिर क्या था संगठन की लीडर बनने के बाद

उसने यह ठान लिया कि उसे अब सड़कों पर जिंदगी गुजार रहे बच्चों के हक के लिए लड़ना है। तब से वह बहुत ही समझदारी और निडरता के साथ सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए काम करने लगी और उनकी समस्याओं व परेशानियों को सरकारी व गैर सरकारी सभाओं में रखने लगी।

उसके इन गुणों को देखते हुए उसे पहले लीडर, फिर जिला सचिव और अब 7 अगस्त, 2015 को संगठन का राष्ट्रीय सचिव बना दिया गया है।

ज्योति ने कहा कि मुझे इस बात की बेहद खुशी हुई कि संगठन के सदस्यों द्वारा मुझे संगठन के राष्ट्रीय सचिव के एक उम्मीदवार के रूप में मेरे नाम की घोषणा की गई। इस चुनाव में दो उम्मीदवार थे एक मैं और दूसरी चांदनी, जो वेस्ट दिल्ली की जिला सचिव है। इसके बाद हम दोनों के बीच यह चुनाव लड़ा गया। चुनाव से पहले दोनों उम्मीदवारों ने अपना अपना भाषण दिया।

भाषण के बाद लीडरों ने वोट डाला। वोटिंग के बाद वोटों की गणना की गई। वोटों की गणना के बाद पता चला कि 13 वोट चांदनी को और 17 वोट मुझे मिले हैं। इन 17 वोटों के आधार पर मुझे राष्ट्रीय सचिव घोषित कर दिया गया। राष्ट्रीय सचिव बनने के बाद मैं उन सभी लीडरों को धन्यवाद देती हूं और उनको यह विश्वास दिलाती हूं कि मैं तन मन धन से अपने संगठन व उसके सदस्यों के लिए कार्य करूंगी और मैं यह प्रयास करूंगी कि मैं संगठन से जुड़े 12 हजार बच्चों की मदद कर सकूं।

डंडे के बल पर पुलिस करा रही बच्चों से काम

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा के पत्रकार ने रेलवे स्टेशनों पर रहने व काम करने वाले बच्चों से बात की, तो बच्चों ने बताया कि पुलिस डंडे के बल पर हम बच्चों से काम करवा रही है।

पिछले कुछ दिनों से पुलिस हम पर कुछ ज्यादा ही अत्याचार कर रही है। वह हम बच्चों को डंडों से मारती है। जब हम रेलवे स्टेशन पर काम करते हैं तो पुलिस वाले हम बच्चों से अपनी मर्जी से काम करवाते हैं।

14 वर्षीय राशिद (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह पिछले आठ वर्षों से रेलवे स्टेशन पर रह रहा है। मगर पुलिसवाले पहले कभी हमारे साथ इतनी बदसलूकी नहीं करते थे, जितनी आजकल कर रहे हैं। हम बच्चों पर

शेष पृष्ठ 3 पर

साभार : डीएनए

मैडम फटा दूध नहीं पिएंगे

फटा दूध पीने में कंपकपाए हाथ

बालकनामा ब्यूरो

यह घटना आगरा के बीएसए ऑफिस के निकट अशोक नगर स्थित जूनियर हाईस्कूल की है। जहां मिड डे मील की प्लानिंग की उस समय धज्जियां उड़ गईं, जब बच्चों को फटा दूध पीने के लिए मजबूर किया गया। हद तो तब हो गई जब मिड डे मील के तहत छात्र-छात्राओं की सेहत बनाने की बजाए, उसके साथ खिलवाड़ किया गया। इस जूनियर हाईस्कूल में बच्चों की स्पेशल डाइट के तहत उन्हें दूध बांटा गया। लेकिन चौंकाने वाली बात यह थी कि यह दूध फटा हुआ था। लिहाजा छात्र-छात्राओं ने इसे पीने से मना कर दिया, फिर भी प्रिंसिपल ने बच्चों पर यह फटा दूध पीने का दबाव डाला।

छात्र-छात्राओं के मना करने पर प्रिंसिपल ने उनके साथ गाली गलौच की और बहुत ही बर्बरताभरा बर्ताव किया। इसी स्कूल में बढ़ते कदम संगठन की जिला अध्यक्ष पूनम भी पढ़ती है। जब प्रिंसिपल ने बच्चों पर दबाव डालना शुरू किया तो पूनम ने चाइल्डलाइन 1098 को फोन करके इसकी सूचना दी। खबर मिलते ही चाइल्डलाइन कार्यकर्ता तुरंत स्कूल पहुंचे और मामले को संज्ञान में लेते हुए इसकी सूचना बीएसए ऑफिस को दी। बीएसए अधिकारी ने तुरंत कार्यवाही करते हुए प्रिंसिपल की बर्खास्तगी का आश्वासन दिया।

संपादकीय

प्रिय साथियों,

आप सभी को मेरा नमस्कार!

हम आपके सामने बालकनामा के इस नए अंक के साथ उपस्थित हुए हैं। साथियों आपको यह जानकर बहुत खुशी होगी कि हमारे संगठन बढ़ते कदम ने अपनी राष्ट्रीय सचिव का चयन कर लिया है और ज्योति ने हमारे संगठन की नई राष्ट्रीय सचिव के रूप में अपना पदभार संभाल लिया है।

हम अपने इस अखबार के माध्यम से सड़क व कामकाजी बच्चों की दिल को छू लेने वाली सत्य घटनाओं पर आधारित रिपोर्ट आप तक पहुंचा रहे हैं, जिससे समाज व प्रशासन का ध्यान इनकी ओर आकर्षित किया जा सके। अपने इस अखबार में प्रकाशित हुई खबरों के द्वारा हम चाहते हैं कि आप भी सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं को समझें और उन्हें दूर करने का प्रयास करें। हम चाहते हैं कि आप भी हमारे इस अखबार का हिस्सा बनें।

यदि आपको हमारा यह अंक पसंद आया हो या बच्चों से संबंधित कुछ विषयों के साथ आप हमसे जुड़ना चाहते हैं तो आप इस अखबार में दिए गए पते पर हमसे संपर्क करें।

संपादकीय मंडल

ये आसरा भी छूटा तो कहां जाएंगे हम

चांदनी (18 वर्ष)

कालका जी मंदिर के बाहर की जिस जगह पर लोग पंडाल डालकर रह रहे थे, वह जगह खाली करके जा रहे थे। ऐसे ही एक परिवार के पास तीन बच्चियां रहती थी, जिनके खाने पीने व देखभाल का जिम्मा उस परिवार पर था। ये तीनों बच्चियां 12 साल की कुमकुम, 9 साल की कोमल और 11 साल की किरन बहुत परेशान हैं। इन लड़कियों की मम्मी बचपन में छोड़कर चली गई थी और पापा दारू पीते हैं। इन लड़कियों के ऊपर तो मानों मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। इनका कहना है कि यदि इस परिवार ने भी हमें सहारा नहीं दिया तो हम कहां जाएंगे।

यह तीनों बच्चियां किसी और के घर में काम करती हैं और कालका जी मंदिर में एक परिवार के साथ रहती हैं। जिस परिवार में यह बच्चे रहते हैं उनका कहना है कि वह अब और ज्यादा दिन इन बच्चियों को अपने पास नहीं रखना चाहते। वह कहते हैं कि इन बच्चियों को हम कहां रखें, क्योंकि वह खुद भी कालका जी मंदिर के पास रहते हैं और वह अब इस अवस्था में नहीं हैं कि उनका भरण पोषण कर सकें। उनके खाने के लिए खाना दाना वह कहां से लाएंगे और वह अपने बच्चों की देखभाल करें या इन तीनों बच्चियों की।

उस परिवार के लोगों ने कहा है कि उनसे अपने बच्चे ही नहीं संभाले जा रहे हैं। हम इन दूसरे बच्चों को कैसे संभाले और कैसे इन बच्चों की जिम्मेदारी अपने सर पर लें, हम खुद भी तो रोड के किनारे ही रहते हैं। हम इन लड़कियों को कहां लेकर जाएंगे और अगर किन्हीं के साथ कुछ हो गया तो हम क्या करेंगे। इसलिए वह अब उन तीनों बच्चियों को नहीं रखना चाहते। यह बच्चियां चाहती हैं कि उन्हें किसी तरह रहने का ठिकाना मिल जाए और उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाए, जिससे उनका भविष्य उज्जवल हो सके।

झंडे बेचकर मना लेता हूं आजादी का जश्न

बालकनामा ब्यूरो

12 वर्षीय सुनील जो पिछले तीन सालों से दक्षिणी दिल्ली की डिफेंस कॉलोनी और मूल चंद फ्लाई ओवर के नीचे किताबें बेचता है। तीन साल पहले उसका ठेकेदार उसके घरवालों से झूठ बोलकर उसे दिल्ली लेकर आया था कि वह उसे काम के साथ साथ पढ़ाएगा भी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सुनील ने बताया कि मैं सुबह से लेकर रात को 11 बजे तक काम करता हूं। इस काम के दौरान बहुत सारे लोग मुझसे गालियों व अभद्र भाषा के साथ बात करते हैं। जब मैं अपनी शिकायत लेकर अपने ठेकेदार के पास जाता हूं तो वह मुझे उल्टा ही डांट कर भगा देता है और काम करने के लिए कहता है।

सुनील ने बताया कि वह अपने 12 दोस्तों के साथ रहता है। हम एक साथ सोते हैं और एक साथ अलग अलग ट्रैफिक सिग्नल पर काम करते हैं। हम एक ही जिले से हैं। वैसे तो मैं ट्रैफिक सिग्नल पर किताबें बेचता हूं, लेकिन जब 26 जनवरी या 15 अगस्त जैसे त्योहार आते हैं तो मैं झंडा भी बेचता हूं। दूसरे बच्चों की तरह मैं स्कूल जाकर तो ये त्योहार नहीं मना सकता, लेकिन झंडे बेचकर ही मैं अपने देश की आजादी का यह त्योहार मना लेता हूं।

स्कूलों के आस पास मंडराता

भय का साया

बालकनामा ब्यूरो

बदरपुर बॉर्डर कितना भीड़ भाड़ वाला इलाका है, लेकिन फिर भी यहां के स्कूलों में बच्चे जाने को राजी नहीं हैं। क्योंकि यहां के स्कूलों में बच्चों के लिए कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं है। यहां के सरकारी स्कूलों में कोई भी आ जा सकता है। यहां आए दिन स्कूलों में कुछ न कुछ घटित होता रहता है। बदरपुर बॉर्डर के बच्चों ने बताया कि यहां के स्कूल में लड़कियों और लड़कों के साथ कई बार खतरनाक केस हो चुके हैं।

इस बारे में जब बालकनामा की पत्रकार ने बच्चों से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि अभी कुछ दिन पहले स्कूल में चोर घुस आए थे और बहुत हंगामा हुआ था। यहां का एक बच्चा स्कूल जा रहा था और वह रास्ते से ही गायब हो गया। उस बच्चे के माता पिता बहुत परेशान थे। उस घटना के बाद बाकी बच्चे भी अपने स्कूल नहीं जा पा रहे थे। क्योंकि हम बच्चों के मन में यह डर बैठ गया था कि कहीं हम भी इस घटना का शिकार ना हो जाएं।

जो बच्चा लापता हो गया था, उसकी खोज करने पर अब उनका बच्चा चार पांच दिनों के बाद मिला है। पर उस बच्चे की हालत ठीक नहीं है और उस बच्चे के पूरे चेहरे पर दाने हैं तथा उस बच्चे के बारे में सुनने में आया है कि उसे बोरी में बांधकर ले जाया जा रहा था। परंतु ट्रेन में वह बच्चा पुलिस के हाथ लग गया था। उस बच्चे का पैर भी कटा हुआ था। नजदीक से देखने पर मालूम हो रहा था कि उस बच्चे के साथ जबरदस्ती की गई है।

इस घटना ने बच्चों पर बहुत गलत प्रभाव डाला है। इस कारण अधिकतर बच्चे स्कूलों में पढ़ने नहीं जा पा रहें हैं। बच्चों का कहना है कि अगर स्कूल की हालत ठीक नहीं हुई तो वह दिन दूर नहीं कि उन स्कूलों में कोई भी बच्चा पढ़ने नहीं जाएगा।

और हम सरकार से चाहते हैं कि ऐसा ना हो तथा सभी स्कूलों की देखरेख व बच्चों को पूरी सुरक्षा प्रदान की जाए। तभी बच्चे इस तरह के खतरनाक हमलों से बच सकेंगे।

हम कब होंगे आजाद ?

स्वतंत्रता दिवस पर बढ़ते कदम ने उठाया सवाल

बालकनामा ब्यूरो

पंजाब नेशनल बैंक द्वारा 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में सभी बच्चों ने राष्ट्रीय गान गाकर देश के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया।

कार्यक्रम के दौरान जब बच्चों से पूछा गया कि आजादी का मतलब क्या है तो बच्चों ने बताया हमारे लिए तो स्वतंत्रता दिवस का मतलब छुट्टी का दिन होता है। क्योंकि हमें तो आजादी का मतलब समझ ही नहीं आता।

संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने कहा कि जिस दिन भारत मे बच्चों को पूर्ण रूप से उनके अधिकार मिलना शुरू हो जाएंगे, तब सही मायने में देश आजाद होगा। क्योंकि आज भी लोग कन्याओं की हत्या गर्भ में ही करा देते हैं। लड़कियों को स्कूल पढ़ने नहीं भेजते। हमें तो आजादी का मतलब तक नहीं पता।

भले ही देश को आजाद हुए 69 साल हो गए हों, लेकिन सड़कों पर पलने वाला बचपन आज भी आजाद नहीं हुआ है। हम सभी बच्चे तो तभी खुद को आजाद समझेंगे, जब हमें भी हमारे अधिकार मिलेंगे और देश की उन्नति के साथ साथ हम बच्चों की स्थिति में भी सुधार आएगा।

डंडे के बल पर पुलिस करा रही बच्चों से काम

पृष्ठ 1 का शेष

झूठा चोरी का इल्जाम भी लगाया जाता है। राशिद ने बताया कि यदि रेलवे स्टेशन पर किसी की मृत्यु हो जाती है तो पुलिस हमसे डेड बॉडी उठवाती है। इतना ही नहीं वह थानों में हमसे कूड़ा करकट उठवाती है और साफ सफाई करवाती है। मना करने पर वह हमें थाने ले जाकर डंडों से मारती है। इस वजह से आए दिन हमें पुलिस के डंडे खाने पड़ते हैं। आजकल हम बच्चों को रेलवे स्टेशन पर रहने की कीमत कुछ इस तरह चुकानी पड़ रही है। रेलवे स्टेशन पर हमसे झाड़ू लगवाई जा रही है।

15 वर्षीय बन्टी (परिवर्तित नाम) ने कहा कि हम बच्चों के लिए रेलवे स्टेशनों पर कोई सुरक्षा नहीं है। हमें जब देखो तब प्रताड़ित किया जा रहा है। हमें पुलिस के डंडों से बहुत डर लगता है। वह अपने डंडे की ताकत दिखाकर हम बच्चों से अपनी मनमर्जी से जो चाहे वो काम करवा रही है।

कलाम के जाने से शोक में डूबे बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का अचानक दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। इस खबर से पूरा देश शोक में डूब गया। एकाएक जब यह खबर सभी को पता चली तो सभी के चेहरों पर उदासी छा गई। बड़े ही नहीं बच्चों के चेहरे भी उतर गए।

14 वर्षीय माला बेचने वाली बढ़ते कदम की सदस्य रोशनी को जब यह पता चला तो एकाएक उसके मुंह से निकल पड़ा कि या तो हम चाचा नेहरू को जानते थे या कलाम अंकल को। अब उनके चले जाने के बाद हम बच्चों को रास्ता कौन दिखाएगा?

डॉ. अब्दुल कलाम सभी की जिंदगी के प्रेरणास्त्रोत थे, लेकिन सड़कों, फुटपाथों व स्टेशनों पर रह रहे ये बच्चे भी इनके मुरीद थे। ये बच्चे भले सड़कों पर रहते थे, लेकिन इनको पता था कि श्री अब्दुल कलाम कौन हैं और कैसे इस मुकाम तक पहुंचे..? ये सभी बच्चे हमेशा संगठन की मीटिंगों में डॉ. कलाम की उपलब्धियों व संघर्ष पर बात करते थे। उनकी अंतिम विदाई के दिन भी संगठन के सभी सदस्यों ने एक शोक सभा का आयोजन किया और देश के महान वैज्ञानिक और बच्चों के प्रिय श्री कलाम की तस्वीर पर माला व फूल अर्पित किए और पांच मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

रोजा इफ्तार के आयोजन में मांगी बच्चों के सुनहरे भविष्य की दुआ

बालकनामा ब्यूरो

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अपने संगठन बढ़ते कदम द्वारा रामजान के आखिरी शुक्रवार को इफ्तार पार्टी का आयोजन किया गया। बढ़ते कदम संगठन की सलाहकार शन्नो ने बताया कि रमजान के इस पाक महीने के आखिरी शुक्रवार को जिस दिन रमजान विदा हो रहे हैं और शनिवार को होने वाली ईद की खुशी में यह पार्टी आयोजित की गई थी। इस पार्टी के आयोजन का मुख्य उद्देश्य सभी सड़क व कामकाजी बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य व उज्जवल भविष्य की कामना करना और एकता का संदेश देना है।

सभी बच्चों ने इस इफ्तार पार्टी का खूब आनंद उठाया। 13 वर्षीय मोइन ने कहा कि हमें बहुत अच्छा लगा कि संगठन ने हम सभी बच्चों के लिए ये पार्टी आयोजित की। हम चाहते हैं कि हम बच्चों की तरह हमारे देश के सभी लोग मिलजुलकर भाईचारे से रहें और सारे त्योहार मिलकर खुशियों के साथ मनाएं।

15 वर्षीय आफताब ने कहा कि हमारे संगठन बढ़ते कदम की यही विशेषता है कि हमारे यहां सारे त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं फिर चाहे वो दिवाली हो या ईद।

पूनम ने दिलाया तीन बच्चों को सहारा

पूनम (15 वर्ष)

आगरा के बस्ती मोहल्ले में रहने वाले इस परिवार के बच्चे बहुत ही मुश्किल घड़ी से गुजर रहे थे। तभी बढ़ते कदम की जिला सचिव पूनम उनके लिए एक मसीहा बनकर आईं। पूनम ने इस परिवार में रहने वाले बच्चों से 10 वर्षीय रूबी, 12 वर्षीय काली, 8 वर्षीय तुलसी और 14 वर्षीय सोनू से बात की।

बच्चों ने बताया कि कई वर्ष पहले हमारे पिता गुजर गए थे। उनके जाने के बाद हमारी माता कोठियों में झाड़ू पोछा लगाकर हमारा पालन पोषण करने लगी। लेकिन मेरी माता को टीबी हो जाने के कारण हमें उन्हें एस.एन. मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाना पड़ा। हमारे पास उनके ही इलाज के पैसे नहीं थे कि हमारा भाई सोनू भी इसकी चपेट में आ गया। अब हम ऐसी परिस्थिति से गुजर रहे हैं कि न तो खुद और न उनकी देखभाल कर सकते हैं।

पूनम ने तुरंत 1098 चाइल्डलाइन को फोन किया और उनसे मदद की गुहार लगाई। चाइल्डलाइन टीम बच्चों से जाकर मिली और बीमार सोनू का चेकअप कराया। उन्होंने पत्र द्वारा इसकी सूचना जिलाधिकारी आगरा को दी। जिलाधिकारी ने इन बच्चों की मदद का आश्वासन दिया। चाइल्डलाइन ने बच्चों से होम जाने की बात की, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। अब चाइल्डलाइन द्वारा वहां पर रहकर उनकी मदद की जा रही है।

बच्चों को खाने पीने की सामान हेतु पूनम ने आसपास के लोगों से बात की तो कुछ लोगों ने आगे आकर उनकी मदद की। संगठन के प्रयास से यह सारा मामला मीडिया की सुर्खियों में आया तो एक गुमनाम व्यक्ति ने उनके परिवार के लिए पूरे एक महीने का राशन भरवाया और एक सामाजिक कार्यकर्ता श्री नरेश पारस जी उनकी माता का इलाज करवा रहे हैं।

यही नहीं पूनम के प्रयास से तीनों बच्चों का दाखिला प्राइमरी कन्या पाठशाला में हो गया।

समिति के लिए चिंता का विषय बना बेसहारा बच्चों का पुर्नवास

बालकनामा ब्यूरो

ताज नगरी आगरा की सड़कों पर जीवन गुजार रहे अनाथ व बेसहारा बच्चों के रहने का कोई ठिकाना नहीं है। इस समस्या को लेकर संगठन की जिला अध्यक्ष 15 वर्षीय पूनम ने आगरा की बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष श्रीमती कमलेश कुमारी जी से मिली और उनको इन समस्याओं से अवगत कराया।

आगरा के बस्ती मोहल्ले में रहने वाले बच्चों की समस्याओं के संबंध में जानकर श्रीमती कमलेश कुमारी जी ने कहा कि बस्ती में रहने वाले सभी बच्चों को यदि किसी भी तरह की समस्या या परेशानी हो तो वो सभी समिति के साथ बैठक कर सकते हैं। हम उनकी समस्याओं को सुनने के बाद उनको हल करने का पूरा प्रयास करेंगे।

जब पूनम ने अध्यक्ष से पूछा कि बेसहारा बच्चों के पुर्नवास पर बाल कल्याण समिति क्या कार्य कर रही है तो अध्यक्षा ने कहा कि हम बेसहारा बच्चों के पुर्नवास हेतु पूरी कोशिश कर रहे हैं। क्योंकि समिति का यही प्रयास है कि कोई सड़क पर न रहे। हमारे लिए भी बच्चों का पुर्नवास एक चिंता का विषय बना हुआ है। हम जल्द ही इसका कोई न कोई उपाय अवश्य ढूंढ निकालेंगे।

अंत में पूनम ने उनसे पूछा कि आगरा में जिन बच्चों के लिए शिशु होम बने हुए हैं, उसमें कितने वर्ष के बच्चों को लेने व रखने की सुविधाएं उपलब्ध हैं? तो अध्यक्ष श्रीमती कमलेश कुमारी जी ने बताया कि शिशु होम में 0 से 10 वर्ष तक के शिशु को रखने और देखभाल करने की सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इतनी आयु वर्ष का यदि कोई भी बच्चा हो तो समिति के सहयोग से उसे शिशु होम भेजा जा सकता है।

तोता-मैना संवाद

सोशल ऑडिट कमेटी की भूमिका

तोता मैना एक पेड़ की डाली पर बैठे होते हैं, तभी मैना उड़कर कहीं जा रही होती है।

तोताः अरे मैना, इतनी सुबह सुबह तुम कहां जा रही हो...??

मैनाः अरे तोता आज मैं एक बहुत जरूरी मीटिंग में जा रही हूं...

तोताः अच्छा, तो क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूं...जरा मैं भी तो देखूं कि आखिर तुम कौन सी मीटिंग में जा रही हो..?

(दोनों उड़कर सोशल ऑडिट कमेटी की मीटिंग में जा पहुंचे)

मैनाः पता है तोता, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने बच्चों के होम के लिए एक सोशल ऑडिट कमेटी का गठन किया है और आज यहां उसी की मीटिंग चल रही है।

तोताः अरे मैना, ये कौन सी कमेटी है और इस कमेटी का गठन कब किया गया?

मैनाः तोता, 17 अप्रैल, 2015 को सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार किशोर न्याय अधिनियम के तहत महिला एवं बाल विकास विभाग ने केंद्रीय स्तर पर सोशल ऑडिट कमेटी का गठन किया है। सोशल ऑडिट कमेटी किशोर न्याय अधिनियम, 2000 के प्रावधानों पर आधारित है।

तोताः अरे वाह मैना, यह तो बहुत अच्छी बात है....लेकिन यह बताओ कि इस कमेटी के क्या कार्य होंगे..?

मैनाः तोता इस कमेटी में सात सदस्य होंगे, जो वर्ष में एक बार बच्चों के लिए बनाए गए बाल गृहों के कार्यों और सुविधाओं की समीक्षा व मूल्यांकन करेंगे।

तोताः लेकिन मैना, इतना कठिन कार्य कमेटी कैसे करेगी..?

1. मैनाः अरे बुद्धू तोता.... कमेटी दो तरह से कार्य करेगी.... इसका पहला कार्य प्रतिवर्ष किशोर न्याय अधिनियम के कार्यान्वयन की समीक्षा व मूल्यांकन करना, जिसके तहत.....

- किशोर न्याय बोर्ड, बाल कल्याण समिति व विशेष किशोर पुलिस इकाई की स्थापना के कार्यों की समीक्षा करना,
- किशोर न्याय बोर्ड व बाल कल्याण समिति के लंबित मामलों की जांच करना,
- विशेष किशोर पुलिस इकाई के कार्यों की समीक्षा करना,
- कानून का उल्लंघन करने वाले और देखभाल व संरक्षण के जरूरतमंद बच्चों के संबंध में उपयोग में लाने वाले बाल मित्र साधनों की समीक्षा करना,
- किशोर न्याय अधिनियम के कार्यान्वयन को प्रभावित करने वाले दूसरे अन्य विचाराधीन मामलों की समीक्षा करना

तोताः और दूसरा...?

मैनाः दूसरा... इसके कामकाज की समीक्षा करना, जैसे.....

- बाल संरक्षण संस्थान जैसे- संप्रेषण गृह, विशेष गृह, संरक्षित स्थान, बाल गृह और शेल्टर होम की समीक्षा करना,
- विशेष गोद लेने वाली एजेंसियों की समीक्षा करना,
- राज्य सोशल ऑडिट कमेटी के कार्यों की समीक्षा करना,
- राज्य स्तर की सोशल ऑडिट कमेटी की रिपोर्ट का परीक्षण करना और कमेटी के कार्यों को बेहतर बनाने के लिए सुझाव देना,
- मंत्रालय को वार्षिक सोशल ऑडिट रिपोर्ट भेजना

तोताः अरे वाह मैना, यह तो वाकई में बहुत अच्छा हुआ...इससे जरूरतमंद बच्चों को फायदा होगा...

मैनाः हां तोता.....

इतना कहकर दोनों दूसरी खबर की तलाश में उड़ पड़ते हैं....

रेडियो पर बच्चों ने रखी अपने मन की बात

पूजा (15 वर्ष)

रेडियो मंत्रा 91.9 एफ.एम ने स्टेशन पर रहने व काम करने वाले बच्चों के साथ एक कार्यक्रम किया। इस कार्यक्रम के दौरान उन्होंने स्टेशन पर रहने वाले बच्चों की जिंदगी के बारे में बात की। स्टेशन पर जिंदगी गुजार रही बढ़ते कदम संगठन की सदस्य बॉबी व निशा ने रेडियो मंत्रा के माध्यम से बताया कि स्टेशन पर अकसर हम लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। यहां आने जाने वाला हर व्यक्ति हमें गलत और गंदी नजरों से देखते हैं और गलत शब्द बोलते हैं।

बढ़ते कदम के सदस्य गोपाल ने रेडियो मंत्रा को बताया कि हम बच्चों को पुलिस ही नहीं, राह चलते यात्री भी शक की नजरों से देखते हैं। ऐसा लगता है मानो

हम बच्चे बहुत बड़े अपराधी हों। स्टेशन पर कहीं भी कुछ गलत होता है तो सब हमको ही शक की नजरों से देखते है। हमारा सपोर्ट करने वाला कोई नहीं हैं। इस रेडियो चैनल के माध्यम से स्टेशन पर रहने वाले हम सभी बच्चे अपनी सुरक्षा की मांग करते हैं।

बढ़ते कदम की जिला सचिव पूजा ने बताया कि एक हमारा संगठन बढ़ते कदम ही है जो सड़क व कामकाजी बच्चों की पहचान की बात करता है, उनकी पहचान दिलाने हेतु उन्हें जानकारी देता है और उनके अधिकारों के लिए लड़ रहा है। यह संगठन हम बच्चों का ही बनाया हुआ है और हम ही इसे चला रहे हैं।

इस तरह बढ़ते कदम के सभी सदस्यों ने रेडियो मंत्रा 91.9 एफ. एम. के कार्यक्रम में अपनी समस्या व बातों को रखा, जिससे लोगों को बच्चों की समस्याओं का एहसास हो सके।

कला के माध्यम से बच्चों ने कहा -

'स्टॉप चाइल्ड लेबर'

बालकनामा ब्यूरो

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि सरकार एक ऐसा संशोधन लाने पर विचार कर रही है, जिसमें 14 साल की उम्र का बच्चा, जो स्कूल जाता है वह काम कर सकता है। सरकार के इस संशोधन से न तो बच्चे खुश हैं और न ही सहमत।

ज्ञातव्य हो कि बच्चों ने बाल श्रम पर अभूतपूर्व पेंटिंग बनाई और अर्पना आर्ट गैलरी में इन पेंटिंगों की एक कला प्रदर्शनी आयोजित की। इस कला प्रदर्शनी में बढ़ते कदम के सड़क व कामकाजी बच्चों के साथ दिल्ली के विभिन्न इलाकों में रहने वाले 8 से 16 साल की उम्र के बच्चों द्वारा बनाई गई 81 पेंटिंगों को शामिल किया गया। इस कला प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य श्री असीम श्रीवास्तव जी ने किया।

13 साल की सुमन ने अपनी पेंटिंग में काम के बोझ के तले दबे बच्चे के चित्र के माध्यम से बाल श्रम की वास्तविकता दर्शायी

थी। उसने कहा कि, बच्चों को काम क्यों करना चाहिए? उनकी देखभाल करने वाला कोई क्यों नहीं होता? मैं हैरान हूं कि सरकार ये कैसे कह सकती है कि बच्चा स्कूल से आने के बाद काम कर सकता है? ये स्कूल कहां हैं? मैं आशा करती हूं कि एनसीपीसीआर के सदस्य इस प्रदर्शनी को देखकर कोई नोट लें और इसके खिलाफ कोई ठोस कदम उठाएं।

श्री असीम श्रीवास्तव जी बच्चों की पेंटिंग देखकर बहुत आश्चर्यचकित थे। उन्होंने कहा कि बाल श्रम बहुत ही गंभीर विषय है और बच्चों ने जिस ढंग से इसे अपने चित्रों में कैद किया है, वह वास्तव में बहुत मार्मिक है और हमारे सामने एक प्रश्न खड़ा करती है कि स्टॉप चाइल्ड लेबर?

उन्होंने कहा कि, मैं बच्चों के सुझावों से सहमत हूं और उनके इन सुझावों से मैं विभाग को अवगत कराऊंगा।

क्या सिर्फ बजट बढ़ाने से

बदल जाएगा इतिहास ?

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी ने अपने बजट में शिक्षा व स्वास्थ्य विभागों की स्थिति सुधारने के लिए इसका बजट दोगुना बढ़ाकर देश का इतिहास बदलने की बात की है लेकिन सरकारी स्कूलों व सरकारी अस्पतालों की स्थिति तो जस की तस बनी हुई है।

इस वास्तविकता की जांच पड़ताल कर रहे बालकनामा के रिपोर्टर उन 18 बच्चों से मिले, जिन्होंने सरकारी स्कूलों में दाखिला लिया है। ये 18 बच्चे रैन बसेरा व पुल के नीचे रहते हैं। इन बच्चों ने बताया कि जब उनका दाखिला स्कूल में कराया जा रहा था तो उन्हें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। स्कूल में उन बच्चों से ठीक से बात तक नहीं की गई। 14 वर्षीय राहुल ने बताया कि स्कूल के अध्यापक हम बच्चों का दाखिला लेने से मना कर रहे थे, क्योंकि यदि सड़क पर रहने व भीख मांगने वाले बच्चे उनके स्कूल में पढ़ेंगे तो इससे दूसरे बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। इसलिए वह हमें दाखिला नहीं देना चाहते थे। यह सुनकर मेरा आत्मविश्वास खो गया था और पढ़ने की लालसा खत्म होती गई थी।

बच्चों ने बताया कि स्कूलों में अध्यापक ठीक से पढ़ाते नहीं है और कुछ स्कूलों में तो अध्यापक

बहुत कम संख्या में हैं। इस बात का पता लगाने के लिए बालकनामा के रिपोर्टर उस स्कूल में गए। वहां जाकर वाइस प्रिंसिपल से मुलाकात की तो उनका कहना था कि उनके स्कूल में अध्यापक की संख्या बहुत कम है और इस वजह से वह बच्चों पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते। उन्होंने बताया कि वह पिछले कुछ महीनों से ई मेल के द्वारा शिक्षा विभाग को लगातार इसकी सूचना दे रही हैं, पर कोई जवाब नहीं आ रहा है।

बच्चों ने बताया कि वहां वाइस प्रिंसिपल ही दाखिला करती हैं और बच्चों की पढ़ाई का ध्यान भी रखती हैं। इस स्कूल में बहुत कम अध्यापक हैं और बच्चों की संख्या बहुत ज्यादा है। इन सरकारी स्कूलों के अध्यापक बच्चों की पढ़ाई पर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। बच्चों का कहना है कि दिल्ली सरकार केवल बजट बढ़ाने से इतिहास नहीं बदल पाएगी, जब तक शिक्षा व शिक्षकों की दशा व दिशा में बदलाव नहीं आएगा।

मुकेश : नशे के अंधकार से ज्ञान के उजाले की तरफ

बालकनामा ब्यूरो

16 वर्षीय मुकेश महज 11 वर्ष की उम्र में घर से स्टेशन आ गया था। वह करीब 5 सालों से स्टेशन पर रह रहा है। जब वह स्टेशन आया तो गुटखे बेचने का काम करने लगा। जब स्टेशन पर रहने वाले बच्चे उसके दोस्त बनें तो उनके साथ रहकर वह भी बीड़ी सिगरेट पीने लगा। सभी दोस्तों के साथ मिलकर राह चलते लोगों की जेब तक काटने लगा। वह बुरी तरह नशे का आदी हो गया था।

मुकेश आगे तो बढ़ना चाहता था, लेकिन एक बार नशे के दलदल में जो फंस गया, वह आसानी से उससे बाहर नहीं आ सकता। पर मुकेश के अंदर स्वयं को बदलने और इस दलदल से बाहर निकलने का हौसला था।

इसी हौसले के बल पर मुकेश बढ़ते कदम संगठन से जुड़ा और चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे हार्म रिडक्शन सेंटर जाने लगा। मुकेश कुछ दिनों तक उस सेंटर में पढ़ने गया, लेकिन उसने अपने कदम पीछे खींच लिए। पर बढ़ते कदम संगठन के लीडरों ने हार नहीं मानी।

संगठन की टीम के सदस्य फिर उससे मिलने स्टेशन पहुंचे और उसे समझाया। फिर वह उसे सेंटर ले गई और उसने फिर से

धीरे धीरे सेंटर आना शुरू कर दिया।

अब मुकेश रोज आने लगा। वह पढ़ाई में भी रूचि लेने लगा। अब वह हिन्दी पढ़ लेता है, गणित और अंग्रेजी का ज्ञान भी उसे हो गया है। आजकल वह बढ़ते कदम का एक होनहार लीडर बन गया है। वह रोज सुबह जल्दी पढ़ने के लिए आता है और दूसरे बच्चों को नशा करने से रोकता है। वह सेंटर में आने से पहले बच्चों का नशा करने वाले सभी पदार्थ उनसे लेकर जमा कर लेता है, उसके बाद ही उन बच्चों को पढ़ने के लिए आने देता है। इसके साथ वह उन सभी बच्चों को अलग अलग कार्यक्रमों में व्यस्त रखने की भी कोशिश करता रहता है, ताकि यह बच्चे ज्यादा समय तक अपने नशे से दूर रह सकें। मुकेश पूरे दिन बच्चों की मदद करने में ही लगा रहता है। वह अपना काम बहुत अच्छे से और समझदारी के साथ करता है। उसने बड़े होने के बाद अपना सपना साकार करने की ज्योति जलाई है। उसने कहा है कि वह पढ़ लिखकर एक अच्छा अध्यापक बनना चाहता है और वह इस सपने को सच करने के लिए मेहनत कर रहा है। वह बाकी बच्चों की जिन्दगी को प्रभावित कर सके, यही उसके जीवन का उद्देश्य है।

हमारे अच्छे दिन कब आएंगे

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन द्वारा 7 अगस्त, 2015 को आयोजित की गई राष्ट्रीय मीटिंग में अगल अलग जिलों से संगठन का प्रतिनिधित्व कर रहे 35 लीडरों ने शिक्षा, बाल व्यापार, बाल मजदूरी, सड़क पर रहने वाले बच्चों की पहचान इत्यादि मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। लीडरों ने कहा कि पिछले दो सालों से यही सुनते आ रहे हैं कि अच्छे दिन आएंगे, लेकिन हम सड़कों पर रहने वाले बच्चों के अच्छे दिन कब आएंगे।

बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री जी अच्छे दिनों की बात करते हैं, लेकिन क्या वो जानते हैं कि देश में 11 मिलियन बच्चे सड़कों पर अपना जीवनयापन करने को मजबूर हैं और अपने पहचान के अधिकार से वंचित हैं। पहचान का अधिकार न होने के कारण ये 11 मिलियन बच्चे शिक्षा व सरकारी सुविधाओं से वंचित हैं। ज्योति ने कहा कि मैं प्रधानमंत्री जी से आग्रह करती हूं कि आप इस विषय पर जल्द से जल्द कोई कदम उठाएं और हम बच्चों के लिए भी अच्छे दिन लाने का प्रयास करें।

बैठक में उपस्थित संगठन की पूर्व राष्ट्रीय सचिव चांदनी ने बताया कि अपने दो साल के कार्यकाल के दौरान उन्होंने लगभग 20 सरकारी व गैर सरकारी अलग अलग संस्थाओं व बच्चों से संबंधित सरकारी विभागों के अधिकारियों से बच्चों के मुद्दों पर बात की। लेकिन किसी ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया।

हमारे पास हमारा यह अखबार बालकनामा ही एक माध्यम है जिसके द्वारा हम उन तमाम बच्चों की समस्याएं प्रधानमंत्री मोदी तक पहुंचा रहे हैं।

सुरक्षा विहीन बच्चों ने मार्क हेनरी से लिया सुरक्षा का वादा

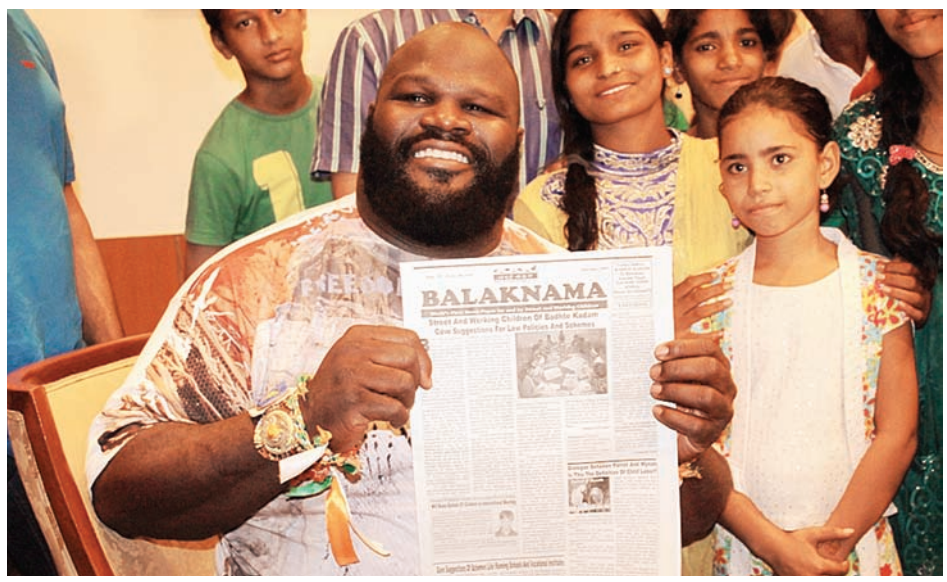

बालकनामा ब्यूरो

रक्षाबंधन के अवसर पर जब दुनिया के जाने माने रेसलर मार्क हेनरी बढ़ते कदम संगठन के 20 सदस्यों से मिले तो सभी बच्चे मार्क हेनरी से मिलकर और उनसे बात करके बहुत खुश हुए। लड़कियों ने मार्क हेनरी को राखी बांधी और उनसे सड़कों, फुटपाथों पर जिंदगी गुजार रहे सुरक्षा विहीन बच्चों के लिए एक फाइट लड़ने का वादा लिया। सभी बच्चों ने मार्क हेनरी को अपना विश्व का पहला सड़क व कामकाजी बच्चों का अखबार बालकनामा दिखाया। मार्क हेनरी बालकनामा पढ़कर बहुत खुश हुए। उन्होंने सड़क व कामकाजी बच्चों की इस सोच की सराहना की और लोगों से अपील की कि वो इस अखबार को जरूर पढ़ें।

असिस्टेंट कमांडेंट आर.पी. तोमरः बाल सुरक्षा सर्वोपरी है

बालकनामा ब्यूरो

आगरा के आरपीएफ पुलिस थाने में आयोजित 'सुरक्षा सप्ताह' कार्यक्रम में सड़क व कामकाजी बच्चों ने भाग लिया। इन सभी बच्चों ने आरपीएफ के असिस्टेंट कमांडेंट श्री आर.पी. तोमर जी से मुलाकात की।

पहले तो श्री आर.पी. तोमर जी ने बच्चों से स्टेशन पर क्या अच्छा लगता है और क्या बुरा ये पूछा फिर उन्हें इस बात की जानकारी दी कि, आरपीएफ द्वारा आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर 'सुरक्षा सप्ताह' कार्यक्रम

मनाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य बाल सुरक्षा सर्वोपरी है।

यदि आप को कभी भी आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर कुछ भी गलत होता नजर आए तो आप तुरंत हमें जानकारी दें। हम हमेशा आपकी मदद करने के लिए तैयार हैं।

प्रधानमंत्री जी झाड़ू उठा सकते हैं तो आप क्यों नहीं

बच्चों ने स्वच्छता अभियान रैली के माध्यम से किया जागरूक

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने स्वच्छता अभियान रैली निकालकर लोगों से रेल व रेलवे स्टेशन को स्वच्छ रखने की अपील की। इस रैली में कम से कम 150 सड़क व कामकाजी बच्चों ने भाग लिया।

स्टेशन पर रहने वाले सभी बच्चों ने रेलवे स्टेशन को साफ सुथरा बनाने व वहां पर आने जाने वाले यात्रियों को स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से यह रैली निकाली।

रैली में कदम से कदम मिलाकर चलने वाले 14 साल के गोलू ने कहा कि जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी स्वयं झाड़ू लेकर गंदगी को साफ कर रहे हैं तो फिर हम देश के बच्चों व नागरिकों को भी अपने आस पास की साफ सफाई का ध्यान रखना चाहिए। और फिर रेलवे स्टेशन तो हमारे देश का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए हमें रेलवे की साफ सफाई पर बहुत ध्यान देना होगा।

15 वर्षीय हेमा ने कहा कि रेलवे स्टेशन तो हर देश की पहचान होता है, क्योंकि यहां पर देश विदेश के लोग आते हैं। यदि हमारा रेलवे स्टेशन इतना गंदा रहेगा तो हमारे देश की छवि पूरे विश्व के सामने खराब होगी।

13 साल के हर्ष ने रैली के दौरान रेलवे स्टेशन पर आने जाने वाले सभी यात्रियों व स्टेशन पर सामान बेचने वाले लोगों से अपील की कि वे रेलवे स्टेशन पर गंदगी न फैलाएं और इसे साफ सुथरा रखने का प्रयास करें।

मथुरा के आरपीएफ व जीआरपी स्टाफ ने बच्चों के इस प्रयास की सराहना की। उन्होंने कहा कि अब तो भारत सरकार भी देश को स्वच्छ बनाने को लेकर बहुत सजग हो गई है। रेलवे विभाग का भी यही प्रयास है कि वे रेलवे स्टेशनों व ट्रेनों को साफ सुथरा रखें। लेकिन यह प्रयास आप सभी के सहयोग के बिना असंभव है। बच्चों के साथ साथ पूरा रेलवे विभाग भी चाहता है कि रेलवे स्टेशन पर आने जाने वाला हर व्यक्ति यहां की स्वच्छता का ध्यान रखे और गंदगी न फैलाएं।

पिता ने शबाना के पैरों में डाल रखी हैं बेड़ियां

बालकनामा ब्यूरो

9वर्षीय शबाना मथुरा स्टेशन पर रहती है। यह एक बहन और दो छोटे भाई हैं। शबाना की माता अपने बच्चों को छोड़कर चली गई हैं। इसके पिता जी बहुत शराब पीते हैं। शबाना कबाड़ा बीनने का काम करती है। इससे पूरे दिन वह जो भी पैसे कमाती है, उसके पिता उससे वो सारे पैसे छीन लेते हैं और उन पैसों से शराब पी जाते हैं।

शबाना पढ़ना चाहती है, लेकिन अपने भाई बहनों के पालन पोषण के खातिर उसे जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। शबाना की पढ़ाई के प्रति लगन देखकर चेतना कार्यकर्ता ने उसे सेंटर आकर पढ़ने के लिए बोला और वह सेंटर

आई भी। लेकिन उसके पिता ने उसके सेंटर जाने पर पाबंदी लगा दी। वह शबाना को अपने साथ रोज कबाड़ा बीनने के लिए मथुरा से फरीदाबाद ले जाने लगा।

जब बढ़ते कदम की पदाधिकारी पूजा को इस बात का पता चला तो वह शबाना से मिली। शबाना ने बताया कि उसके पिता ही उसे पढ़ने नहीं जाने देते और यदि मैं जाती हूं तो मारपीट करते हैं। इसलिए मैं अब उनके साथ कबाड़ा बीनने चली जाती हूं। पूजा ने शबाना को समझाया कि काम के साथ पढ़ाई भी करना जरूरी है। पूजा ने शबाना के पिता को समझाया कि वह अपने बच्चों के साथ दुर्यव्यवहार व मारपीट ना करें। यदि वे ऐसा करेंगे तो संगठन इसकी शिकायत पुलिस से करेगा। उस दिन से शबाना के पिता ने उसे मारना पीटना छोड़ दिया। शबाना पढ़ लिखकर एक अच्छी अध्यापिका बनना चाहती है।

सरकार ने दी हरी झंडी

अपनी सालाना कमाई का बैंक कुछ प्रतिशत जरूरमंद बच्चों पर करेगा खर्च

बालकनामा ब्यूरो

पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर श्री विजय कुमार शर्मा बढ़ते कदम के सदस्यों से मिले और उनसे बातचीत की। उन्होंने सदस्यों को अपने बारे में बताया तथा बच्चों ने भी उनके बारे में जाना। श्री विजय कुमार शर्मा जी ने सदस्यों को बताया कि वह बैंक में खाता खोलते हैं और उन्हें पैसों की बचत के बारे में बताते हैं। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि बैंको को एक साल में लोगों का खाता खोलने से जो भी कमाई होती है, वह रकम सरकार को दे दी जाती हैं। लेकिन हम सभी के लिए यह खुशी की बात है कि इस बार हमारी सरकार ने कहा है कि अब हम इस कमाई का कुछ प्रतिशत रूपया उन बच्चों पर खर्च करेंगे, जो बच्चे गरीबी के दलदल में फंसे हुए हैं।

जरा ध्यान दें

सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए हमारे संगठन बढ़ते कदम की ओर से एक छोटा सा संदेश है कि अगर बच्चे कबाड़ा बीनते हैं, काम करते हैं और उनके माता पिता उन्हें पढ़ने नहीं देते। इन सब समस्याओं के चलते भी बच्चों को अपनी पढ़ाई नहीं छोड़नी है और आगे बढ़ना है। जिस तरह बढ़ते कदम संगठन से जुड़े रेलवे स्टेशनों के कुछ बाल साथी काम के साथ पढ़ाई कर रहे हैं, उसी तरह हर बच्चों को पढ़ाई करनी है। यदि आपको किसी भी प्रकार की मदद की आवश्यकता है तो आप हमारे अखबार में दिए गए पते पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

बच्चों के हेल्पलाइन नंबर

चाइल्ड लाइन नंबर **1098**

पुलिस हेल्पलाइन नंबर **100**

ये दोनों ही नंबर टोल फ्री नंबर हैं। यदि आप किसी मुसीबत में हों तो दोनों ही नंबरों पर 24 घंटे में कभी भी फोन करके मदद ले सकते हैं

दिल्ली के एमसीडी स्कूलों की ज्वाइंट डायरेक्टर से सीधी बात

चांदनी (14 वर्ष)

बालकनामा की पत्रकार चांदनी ने दिल्ली के स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था पर दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग की ज्वाइंट डायरेक्टर श्रीमती मंजू खत्री जी से बात की। शिक्षा विभाग की ज्वाइंट डायरेक्टर श्रीमती मंजू खत्री जी सन् 1990 से दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग में काम कर रही हैं।

चांदनी ने उनसे सड़क व कामकाजी बच्चों के स्कूल जाने की बजाए, बाल मजदूरी पर जाने का कारण पूछा? तो उन्होंने बताया कि बच्चे एक कच्चे मिट्टी के घड़े के समान होते हैं। उसे जिस आकार में हम ढालेंगे वह उस रूप में ढल जाते हैं। इसलिए हमें बच्चों को काम पर जाने की बजाए, स्कूल जाने के लिए प्रेरित करना होगा। हमें हमेशा यह बात ध्यान में रखनी चाहिए, जब तक हम बच्चों को सही दिशा नहीं दिखाएंगे, तब तक सही रास्ते पर नहीं चल पाएंगे।

चांदनी ने उनसे पूछा कि बच्चे सरकारी स्कूल में जाना क्यों नहीं पसंद करते? श्रीमती मंजू खत्री जी ने कहा कि इसमें स्कूल या अध्यापक कुछ नहीं कर सकते और न ही इसके लिए स्कूल जिम्मेदार हैं। ऐसा नहीं है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नहीं

होती। जब तक बच्चे के माता पिता अपने बच्चों पर ध्यान नहीं देंगे, तब तक बच्चा नहीं पढ़ सकता। हमारे अध्यापक इतना समय बच्चों को नहीं दे पाते हैं और ना ही होमवर्क में उनकी मदद करते हैं। इसलिए ज्यादातर बच्चे स्कूल छोड़ घर बैठ जाते हैं।

चांदनी ने उनसे पूछा कि क्या शिक्षा विभाग द्वारा ड्रॉपआउट बच्चों के लिए अलग से कोई कार्यक्रम चलाया जा रहा है? उन्होंने बताया कि हम इस समस्या को दूर करने के लिए ऐसे बहुत से कार्यक्रम स्कूलों में चला रहें हैं, जिससे बच्चे की शिक्षा में रूचि हो और वह रोज स्कूल पढ़ने आए। इसलिए अलग से कार्यकर्ता बच्चों को इकट्ठा कर, उनकी काउंसलिंग करते हैं। यह कार्यक्रम हमारे सदस्यों द्वारा किया जा रहा है। हम पूरा प्रयास कर रहे हैं कि ज्यादा से ज्यादा बच्चों को स्कूल से जोड़ें और उन्हें शिक्षित करें।

आज के युवा कैसे बन सकते हैं कल के उद्यमी

बालकनामा ब्यूरो

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर रहने वाले सड़क व कामकाजी बच्चों को एनएसआईसी के टेकनिकल सर्विस सेंटर में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेने का अवसर मिला। एनएसआईसी द्वारा आयोजित यह प्रशिक्षण कार्यशाला 'आज के युवा कल के उद्यमी' पर आयोजित की गई थी। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में बच्चों को ब्रेड, साबुन, मोजे, वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट बार, जूट, टिशू पेपर, यूज एंड थ्रो प्लेट, गिलास इत्यादि वस्तुएं कैसे बनाई जा सकती हैं और इन वस्तुओं को बनाने के लिए किन किन मशीनों का प्रयोग किया जाता है, इन सब बातों

की जानकारी दी गई।

सभी बच्चों को यह भी बताया गया कि कैसे आप कम पैसों या कम लागत में एक समूह बनाकर अपना खुद का उद्योग प्रारंभ कर सकते हैं। आप कैसे और कहां से इन मशीनों को खरीद सकते हैं। कम जगह में कैसे इन मशीनों को लगाकर अपना उद्योग प्रारंभ कर सकते हैं। इन मशीनों की कीमत क्या है और कैसे इन मशीनों को चलाया जाता है। इसके साथ ही इन सभी बच्चों को मार्केटिंग कैसे की जाती है, इसकी जानकारी दी गई।

सभी बच्चों को यह कार्यशाला बहुत अच्छी लगी। उन्होंने कहा कि हमें तो पता ही नहीं था कि हम कम निवेश में भी अपना उद्योग शुरू कर सकते हैं। यदि हमें कभी भविष्य में अवसर प्राप्त हुआ तो हम जरूर अपना एक समूह बनाकर इस प्रकार का एक उद्योग प्रारंभ कर सकेंगे।

काश ! हर बच्चा मना सकता अपना जन्मदिन

बालकनामा ब्यूरो

श्री निखिल खुराना जी ने बढ़ते कदम के 65 सदस्यों के साथ अपनी बेटी स्मृति खुराना का जन्मदिन मनाया। उन्होंने सभी सदस्यों को बताया कि वह परपट नगर से अपनी बेटी स्मृति खुराना का जन्मदिन मनाने आए हैं। जब उन्होंने बाल सदस्यों से बात की तो उन्हें पता चला कि आज संगठन के सदस्य सूरज, खुशी और संगीता का भी जन्मदिन है। उन्होंने कहा कि यह तो एकदम सोने पर सुहागा हो गया। उन्होंने इन तीनों सदस्यों के लिए भी केक मंगवाया और इनका जन्मदिन भी बड़ी धूमधाम से मनाया। तीनों बाल साथियों ने स्मृति के जन्मदिन का केक एक साथ मिलकर काटा। सभी बच्चों ने इन लोगों को जन्मदिन की बधाई

दी और केक खिलाया। श्री निखिल खुराना जी ने सभी बच्चों के लिए बर्गर, समोसा, फ्रूटी इत्यादि खाने पीने का सामान मंगाया।

स्मृति की मां ने कहा कि मैं आज बहुत खुश हूं कि बेटी का जन्मदिन बढ़ते कदम के सदस्यों के साथ मनाया है। मेरे लिए यह और खास था क्योंकि मैंने एक नहीं, बल्कि चार चार जन्मदिन मनाया। हमारे लिए यह दिन बहुत यादगार रहेगा।

श्री निखिल खुराना ने कहा कि मुझे बहुत अच्छा लगा। काश, हम लोगों के बच्चों की तरह ये बच्चे भी अपना जन्मदिन बहुत धूमधाम से मना पाते। लेकिन मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि अपका संगठन ऐसे बच्चों के लिए बहुत ही अच्छा कार्य कर रहा है।

हमें भी तो बताइए कैसे करते हैं टीवी चैनलों पर विज्ञापन

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन के बाल साथियों को होम शॉप 18 टीवी चैनल का विज्ञापन करने वाले कलाकारों से मिलने का मौका मिला। 15 अगस्त के अवसर पर होम शॉप 18 ने इन बाल सदस्यों को आमंत्रित किया था। बाल साथियों के लिए यह बहुत ही खुशी का मौका था, क्योंकि इस दिन उन्होंने इस टीवी चैनल के लिए विज्ञापन करने वाले अभिनेता व अभिनेत्रियों से मुलाकात की।

होम शॉप 18 के एंकर वरूण धवन ने सभी सदस्यों को बताया गया कि होम शॉप 18 एक टीवी चैनल है, जिसमें विभिन्न प्रकार के सामानों को एक विज्ञापन के माध्यम से टेलीविजन पर दिखाया जाता है। इसके लिए टीवी कलाकारों के माध्यम से सामानों का विज्ञापन किया जाता है। संगठन की सदस्य सुलेखा ने

वरूण धवन से पूछा कि क्या उन्हें भी यहां कार्य करने का मौका मिल सकता है, तो उन्होंने कहा कि यहां पर 12वीं पास कोई भी बच्चा जो टैलेंटेड हो, होम शॉप 18 से जुड़ सकता है।

सिद्धार्थ ने सभी बच्चों को होम शॉप 18 में होने वाले कार्यों के बारे में बताया तथा सभी को होम शॉप 18 की विजिट कराई। अंत में 12 वर्षीय रूस्तम ने सभी कलाकारों को अपना डांस दिखाया।

नौकरी पाकर न रहा इनके खुशी का ठिकाना

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन से जुड़े 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र के बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने हेतु उन्हें जी.एम.आर. ट्रेनिंग सेंटर भेजा गया था। इस व्यावसायिक प्रशिक्षण में निजामुद्दीन स्टेशन के पांच बच्चों के साथ मथुरा स्टेशन के भी चार बच्चों ने भाग लिया था। इन बच्चों ने अपना 45 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। यह प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद इन बच्चों को प्रमाण पत्र दिया गया। इसके बाद इन बच्चों की मॉल, गेस्ट हाउस में नौकरी भी लग गई है।

ज्ञातव्य हो कि जी.एम.आर. व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र में इन बच्चों को बेसिक कंम्प्यूटर की तीन महीने की, बेसिक इलेक्ट्रिकल और हाउस वायरिंग की तीन महीने, फ्रिज व एयअरकंडीशन ठीक करने की साढ़े चार महीने और बेसिक कारगो मैनेजमेंट की तीन महीने की ट्रेनिंग दी गई है। जिसके तहत इन बच्चों को अंग्रेजी और पर्सनाल्टी डेवलेपमेंट का प्रशिक्षण भी दिया गया। यह प्रशिक्षण प्राप्त करके इन बच्चों को बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला, जिसका फायदा उन्हें आने वाले समय में जरूर मिलेगा।

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर रहने वाले 16 वर्षीय विकास ने कहा कि मैंने इस प्रशिक्षण केंद्र में बहुत कुछ सीखा और मुझे इस बात की खुशी है कि प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मुझे अच्छी जगह नौकरी भी मिल गई है। अब मैं स्टेशन की जिंदगी छोड़कर अच्छी जगह नौकरी कर रहा हूं और अपने जीवन को एक नई दिशा की ओर ले जा रहा हूं।

मानों एक अलग ही दुनिया में आ गए हों

बालकनामा ब्यूरो

6 जुलाई, 2015 को बढ़ते कदम के सदस्यों को वाटरपार्क की पिकनिक पर ले जाया गया। इस पिकनिक में निजामुद्दीन और लाजपत नगर के 26 बच्चों ने भाग लिया। 15 वर्षीय ललित ने बताया कि आज जब बढ़ते कदम के सभी सदस्य अपनी सबसे पसंदीदा जगह वाटरपार्क पहुंचे तो उन्हें लगा कि जैसे वह एक अलग ही दुनिया में आ गए हों, जहां ढेर सारा फन और मस्ती थी।

विशाल ने बताया कि वाटरपार्क पहुंचकर हमने झूले झूले और रेन डांस किया। रेन डांस के बाद सभी बच्चे वाटर राइड्स पर गए। जहां सभी ने खूब मस्ती की। कोमल ने बताया मुझे तो हॉन्टेड हाउस बहुत डरावना लगा। इसके अन्दर बिल्कुल अन्धेरा था और तेजी से हंसने की आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

इसके अन्दर एक आइने का कमरा था, जहां चारों ओर आइने ही आइने लगे थे। इसमें हमें बाहर निकलने के लिए सही दरवाजे को खोजना था। हम इसके अंदर गए और सही दरवाजे को खोजकर बाहर भी आ गए।

कुमुद ने कहा कि हमने ऐसी जगह तो सिर्फ फिल्मों और नाटकों में ही देखी थी, लेकिन आज पहली बार हकीकत में देखने का मौका मिला।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है । इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं